කැලණිය විශ්වවිද්‍යාලය - ශ්‍රී ලංකාව

බාහිර විභාග අංශය

ශාස්ත්‍රවේදී (සාමාන්‍ය) උපාධි තෘතීය පරීක්ෂණය (බාහිර) - 2009
2010 අගෝස්තු /සැප්තැම්බර්

මානවශාස්ත්‍ර පීඨය

හින්දී HIND E 3025

පුරාතන හින්දී සාහිත්‍ය ඉතිහාසය හා නූතන හින්දී පද්‍ය සාහිත්‍යය උද්ධෘත
(නියමිත හා අනියමිත)

ප්‍රශ්න සංඛ්‍යාව : 05 කාලය : පැය 03

ප්‍රශ්න **සියල්ලටම** පිළිතුරු සපයන්න

01, निम्नलिखित पद्यांशों में से **किन्हीं दो** पद्यों की संदर्भसहित व्याख्या कीजिए। (25अंक)

(क) बस गयी एक बस्ती है
स्मृतियों की इसी हृदय में,
नक्षत्र लोक फैला है
जैसे इस नील निलय में

ये सब स्फूलिंग हैं मेरी
इस ज्वालामयी जलन के
कुछ शेष चिह्न हैं केवल
मेरे उस महा मिलन के

जो घनीभूत पीड़ा थी
मस्तक में स्मृति सी छायी
दुर्दिन में आँसू बनकर

वह आज बरसने आयी

(ख) तुमने ही मेरे प्राणों को जलने की रीति सिखायी है
तुममें ही मेरे गीतों ने विश्वासमयी गति पायी है
मेरे डूबे-डूबे मन का तुम ही तो ठौर-ठिकाना हो
मेरी आवारा आँखों ने तुम से ही लगन लगायी है
काँटों से भरी विफलता में आधार न जीने का लूटो

(ग) अलसता की-सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह
छाँह-सी अम्बर पथ से चली।
नहीं बजती उसके हाथों में कोई वीणा,
नहीं होती कोई अनुराग, राग-आलाप
नूपुरों में भी रुनझुन-रुनझुन नहीं,
सिर्फ एक अव्यक्त शब्द-सा चुप,चुप,चुप
है गूँज रहा सब कहीं -----

02. **आँसू** कविता के पठित अंश की भावनाओं का स्पष्टीकरण कीजिए। (20अंक)

अथवा

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की **वह तोड़ती पत्थर** कविता पर अपना विचार विमर्श कीजिए।

03. भक्तिसाहित्य में अंतर्गत मुख्य दो भक्ति धाराओं में से किसी एक का विस्तृत वर्णन कीजिए। (20अंक)

04. रीतिकालीन साहित्य का परिचय दीजिए। (20अंक)

05. निम्नलिखित पद्यांश की भावार्थसहित व्याख्या कीजिए। (15अंक)

पेड़ के ऊपर चढ़ा आदमी
ऊँचा दिखायी देता है।
जड में खडा आदमी
नीचा दिखायी देता है
आदमी न ऊँचा होता है,
न नीचा होता है,
न बड़ा होता है, न छोटा होता है;
आदमी सिर्फ आदमी होता है।
इसमें फर्क नहीं पड़ता
कि आदमी कहाँ खड़ा है?
पथ पर या रथ पर?
तीर पर या प्राचीर पर?
फाँसी के तखते पर
फर्क इससे पड़ता है कि जहाँ खड़ा है,
या जहाँ उसे खड़ा होना पड़ता है
वहाँ उसका धरातल क्या है?

******